अमर उजाला
नई दिल्ली | मंगलवार, 19 मार्च 2019
प्रवाह
निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948

बिना प्रयास के शारीरिक या बौद्धिक रूप से कोई विकास नहीं होता है, और प्रयास का अर्थ है काम।...
- केल्विन कूलिज

अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति

देर से ही सही, लोकपाल के अस्तित्व में आने से उच्च स्तर पर भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने और जवाबदेही सुनिश्चित करने में मदद मिलेगी, इसे भारतीय लोकतंत्र के सफर का एक मील का पत्थर कहा जा सकता है।

पहला लोकपाल

उच्चस्तरीय चयन समिति द्वारा सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश पिनाकी चंद्र घोष के नाम पर मुहर लगाने के साथ ही उच्च स्तर पर भ्रष्टाचार की जांच के लिए बहुप्रतीक्षित संस्था लोकपाल के गठन का रास्ता साफ हो गया है। मोरारजी देसाई की अगुआई वाले प्रशासनिक सुधार आयोग ने 1966 में पहली बार लोकपाल की स्थापना की सिफारिश की थी। इसके दो वर्ष बाद लोकपाल विधेयक पहली बार संसद में पेश भी किया गया, लेकिन वह ठंडे बस्ते में चला गया। पिछली यूपीए सरकार के समय जब 2 जी, राष्ट्रमंडल और कोयला घोटालों के सामने आने के बाद सामाजिक कार्यकर्ता अन्ना हजारे ने लोकपाल के गठन की मांग को लेकर आंदोलन किया, तो यह एक केंद्रीय मुद्दा बन गया। इसने दिखाया कि भ्रष्टाचार सिर्फ एक राजनीतिक मुद्दा नहीं है, बल्कि आम लोग इससे बुरी तरह से प्रभावित होते हैं। असल में भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने के लिए जो भी संस्थाएं हैं, उन पर परोक्ष रूप से सरकारों का नियंत्रण रहा है, जिससे उनकी निष्पक्षता पर सवाल उठते रहे हैं। दरअसल राजनीतिक संरक्षण में होने वाले भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाना एक बड़ी चुनौती है। कर्नाटक के पूर्व लोकायुक्त जस्टिस संतोष हेगड़े ने कुछ महीने पहले चिंता जताई थी कि भ्रष्टाचार निरोधक अधिनियम के तहते पूरे देश में 20 फीसदी मामलों में ही सजा हो पाती है। इसकी छाया लोकसभा और विधानसभाओं में भी नजर आती है, जहां ऐसे नेता भी पहुंच जाते हैं, जिनके खिलाफ आपराधिक मामले होते हैं। यह विडंबना ही है कि लोकपाल विधेयक चाहे, भारी दबाव में ही सही 2013 में पारित हो गया था, लेकिन लोकपाल के चयन में चयन समिति को पांच साल से अधिक का वक्त लग गया। हकीकत यह है कि सुप्रीम कोर्ट की कड़ाई के बाद ही लोकपाल का गठन हो पा रहा है। यह उदासीनता राज्यों में भी नजर आती है, जिसके कारण ओडिशा, मिजोरम जैसे अनेक राज्यों में हाल ही में पहली बार लोकायुक्त की स्थापना हुई है। इसके बावजूद लोकपाल को भारतीय लोकतंत्र के सफर में एक मील के पत्थर की तरह देखा जाना चाहिए, क्योंकि मंत्रियों और उच्च अधिकारियों के साथ ही वर्तमान और पूर्व प्रधानमंत्री तक इसके दायरे में होंगे। उम्मीद की जानी चाहिए कि जस्टिस घोष की अगुआई में लोकपाल ऐसी संस्था के रूप में काम करेगा, जिससे उच्च स्तर पर पारदर्शिता और जवाबदेही मजबूत होगी।

हमने धारणाओं को बदला

फरवरी 2017 के विधानसभा चुनाव में भाजपा अपना संकल्प पत्र लेकर जनता के बीच गई थी। यह संकल्प पत्र हमारी सोच ही नहीं वरन प्रदेश के विकास की आत्मा भी है। मुझे यह बताते हुए बेहद प्रसन्नता हो रही है कि चुनाव के दौरान भाजपा ने जो वायदे किए थे, उनमें से अधिकांश पूरे हो गए हैं। पिछले 24 महीने में उत्तर प्रदेश सरकार ने विकास और सुशासन की जो सुदृढ़ नींव रखी है, उससे प्रदेश के बारे में देश, दुनिया के लोगों की धारणा बदली है। 19 मार्च 2017 को जब भाजपा के नेतृत्व में सरकार बनी, तब प्रदेश में अराजकता व असुरक्षा का वातावरण था। लूट-खसोट मची हुई थी। दंगों में देश में उत्तर प्रदेश पहले स्थान पर था। 2012 से 2017 के बीच 1,025 से ज्यादा दंगे हुए। अब हालात बदल गए हैं। दो साल से प्रदेश में कोई दंगा नहीं हुआ। संगठित अपराध पर पूरी तरह रोक लगी है। कानून का राज है। पहले नौकरियां जाति देखकर और रिश्वत लेकर दी जा रही थीं, अब योग्यता के आधार पर मिल रही हैं। पहले ट्रांसफर-पोस्टिंग रिश्वतखोरी का उद्योग बना हुआ था। माफिया को सत्ता के संरक्षण के चलते पुलिस का मनोबल गिरा हुआ था। सत्ता में आने के बाद हमने पुलिस का मनोबल बढ़ाया। अपराधी या तो प्रदेश छोड़कर भाग गए या जेल पहुंच गए हैं। प्रदेश की भाजपा सरकार ने अपराध और अपराधियों के प्रति जीरो टॉलरेंस की नीति अपनाई। पुलिस के कामकाज में राजनीतिक हस्तक्षेप बंद किया। अपराधियों के खिलाफ कठोर कार्रवाई के निर्देशों के चलते अपहरण और एसिड अटैक की घटनाएं रुकीं।

अपराधियों को संरक्षण देने के कारण कैराना व कांधला जैसे कस्बों से पलायन हो रहा था। अब पलायन करने वाले अपने घरों को वापस लौटने लगे। एंटी रोमियो स्क्वॉयड से महिलाओं एवं बालिकाओं के विरुद्ध अपराधों पर सख्ती से अंकुश लगा। महिला सशक्तीकरण के लिए हमारी सरकार ने बेहतरीन कार्य किया है। उत्तर प्रदेश में 1.12 करोड़ निःशुल्क गैस कनेक्शन दिए गए। सभी 75 जिलों में वन स्टॉप सेंटर खोलने की अनुमति दी गई। 40 जिलों में शबरी योजना प्रारंभ की। 181 महिला हेल्पलाइन व रेस्क्यू वैन सेवा का विस्तार किया।

पिछले दो साल में उत्तर प्रदेश सरकार ने सुशासन की जो सुदृढ़ नींव रखी है, उससे प्रदेश के बारे में लोगों की धारणा बदली है। आज संगठित अपराध पर पूरी तरह रोक लगी है और कानून का राज है।

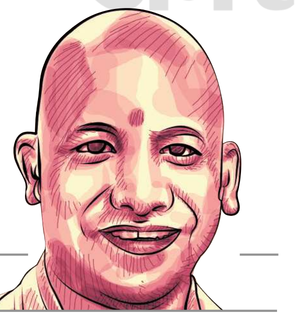

योगी आदित्यनाथ, मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

ढांचागत विकास में सरकार ने पिछली सरकारों के मुकाबले काफी अच्छा और तेज काम किया है। प्रदेश में 341 किलोमीटर लंबे पूर्वांचल एक्सप्रेस-वे का काम शुरू हो चुका है। इसके लिए शत-प्रतिशत भूमि का अधिग्रहण किया गया है। बुंदेलखंड एक्सप्रेस-वे के लिए डीपीआर अंतिम चरण में है। पश्चिमी यूपी को पूर्वी उत्तर प्रदेश से जोड़ने के लिए 600 किलोमीटर लंबे गंगा एक्सप्रेस-वे के लिए सर्वे कराया जा रहा है। 380 किलोमीटर लंबे झांसी-चित्रकूट-प्रयागराज राष्ट्रीय राजमार्ग को चार लेन किए जाने को स्वीकृति दी जा चुकी है। राज्य में 1,16,392 किलोमीटर सड़कों को गड्ढामुक्त किया गया।

सरकार ने स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर बनाया है। प्रदेश में 13 मेडिकल कॉलेजों का निर्माण चल रहा है। आयुष्मान भारत योजना के तहत छह करोड़ लोगों को प्रतिवर्ष पांच लाख रुपये तक की निःशुल्क चिकित्सा बीमा की सुविधा दी जा रही है। प्रदेश में 2,329 उपकेंद्रों का हेल्थ एवं वेलनेस सेंटर के रूप में सुदृढ़ीकरण किया गया है। राष्ट्रीय आयुष मिशन के तहत 10 जिलों में 50 बेड के अस्पताल खोलने का काम चल रहा है।

प्रधानमंत्री आवास योजना में ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल की गई है। पिछली सरकार ने दो साल में पीएम आवास योजना (शहरी) में केवल 20 हजार आवास स्वीकृत किए थे। भाजपा सरकार ने 24 महीने में इस योजना में 11 लाख से अधिक आवास स्वीकृत किए हैं। पीएम आवास योजना (ग्रामीण) में पिछली सरकार दो सालों में 63 हजार आवास नहीं दे पाई, हमारी सरकार ने दो साल में 12 लाख 82 हजार आवास गरीबों को स्वीकृत किए।

पिछली सरकार ने दो साल में केवल 43 लाख शौचालय बनाए, हमारी सरकार ने 24 महीने में 2.49 करोड़ शौचालयों का निर्माण कर बेस लाइन सर्वे के अनुसार प्रदेश को खुले में शौच से मुक्त कर दिया। हर घर को रोशनी देने के संकल्प पर भी हमारी सरकार खरी उतरी है। सौभाग्य योजना में 75 लाख से अधिक गरीबों को निःशुल्क बिजली कनेक्शन दिए गए हैं। बिना भेदभाव के जिला मुख्यालयों को 24 घंटे, तहसील मुख्यालयों को 20 घंटे और ग्रामीण क्षेत्रों में 18 घंटे बिजली दी जा रही है।

किसानों की आमदनी दोगुनी करने के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के लक्ष्य को पूरा करने के लिए सरकार ने सत्ता संभालने के बाद 36 लाख करोड़ रुपये के प्रावधान से लाखों लघु एवं सीमांत किसानों के एक लाख रुपये तक के कर्ज माफ किए। हमारी सरकार ने चार करोड़ से अधिक किसानों को मृदा स्वास्थ्य कार्ड उपलब्ध कराए। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत वर्ष 2017-18 में खरीफ एवं रबी की फसलों के लिए 53.73 लाख किसानों की फसल का बीमा किया गया।

वर्ष 2011-12 से 2017-18 तक के बकाया गन्ना मूल्य का 57 हजार 578 करोड़ रुपये भुगतान डेढ़ साल में करके दिखाया है। पिछली सरकार पांच साल में भी इतना गन्ना मूल्य भुगतान नहीं करा पाई। प्रधानमंत्री सम्मान निधि योजना के तहत 1.03 करोड़ किसानों को दो-दो हजार रुपये की पहली किस्त दी जा चुकी है। इस योजना से प्रदेश के 2.14 करोड़ किसान लाभन्वित होंगे। प्रदेश सरकार ने गेहूं एवं धान की रिकॉर्ड खरीद की। हमारी सरकार ने 633 रोजगार मेलों के माध्यम से 1,21,194 से अधिक युवाओं को रोजगार मुहैया कराया। ढाई लाख से अधिक सरकारी नौकरियां दीं। उनमें भ्रष्टाचार पर रोक लगाई। दो साल में प्रदेश में डेढ़ लाख करोड़ रुपये का औद्योगिक निवेश हुआ है। इससे 15 लाख रोजगार के अवसर सृजित हुए हैं।

हमारी सरकार में यूपी इन्वेस्टर्स समिट का सफल आयोजन किया गया। प्रत्येक जिले के विशिष्ट उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए एक जनपद-एक उत्पाद योजना संचालित की जा रही है। प्रदेश सरकार ने पारंपरिक कारीगरों एवं हस्तशिल्पियों के लिए विश्वकर्मा सम्मान योजना प्रारंभ की। काशी में प्रवासी भारतीय दिवस का आयोजन किया गया। दिव्य एवं भव्य कुंभ का आयोजन किया गया। इन सारे आयोजनों ने प्रदेश के बारे में बनी पुरानी धारणा को बदल दिया है।

अंतर्ध्वनि
>> राजेन्द्र यादव

आज होरी, घीसू, माधव अपनी कहानी खुद लिख रहे हैं

मुझे मित्रों के साथ बैठना बहुत अच्छा लगता है। उनसे बातें करना और तरह-तरह की बातें करना। इसमें मैं कोई उम्र, पोजीशन आदि का भेद नहीं करता। इसलिए सब लोग मुझसे बहुत खुलकर बात करते हैं। जिन्हें हम लोग शुद्ध, सात्विक, पवित्र, आध्यात्मिक किस्म के विचार कहते हैं, उन्हें मैं अपने पास फटकने नहीं देता, क्योंकि वे आदमी को बूढ़ा बनाते हैं। शायद यही मेरी ऊर्जा का राज है। मित्रों की वजह से और तथाकथित आपत्तिजनक बातें सोचने-लिखने से। हमारे दौर की कहानी मध्यवर्ग की कहानी थी। उसमें लेखक भी मध्यवर्ग के थे। उनके पात्र और उनका जो कथा संसार था, वह भी मध्यवर्ग का था, पढ़ने वाले भी मध्य वर्ग के थे। नई कहानी आंदोलन की जो बहुत बड़ी सफलता थी, उसके पीछे कारण यही था कि एक चक्र पूरा होता था। पढ़ने वाले से लेकर लिखने वाले और विषय वस्तु, पात्र तक लगभग उसी मध्यवर्ग से थे। हमने दृष्टिकोण में सामाजिकता लाने की कोशिश की। नई कहानी पूरी तरह मध्यवर्ग की कहानी है। मध्यवर्ग में भी स्त्री-पुरुष के बनते-बिगड़ते पारिवारिक संबंधों की कहानी है।

अस्सी के बाद पूरा परिदृश्य बदल गया। मध्यवर्ग हाशिये पर फेंक दिया गया और फिर जनवादी कहानी आई। हालांकि वहां भी लिखने वाले उसी वर्ग के थे, पर जिस वर्ग के बारे में लिखते थे, वह उनके अनुभव का संसार नहीं था, वह उसके सिर्फ दर्शक हो सकते थे। लेकिन 80-90 के बाद वे लोग लिखने लगे, जिनके बारे में हम लिखते थे। जैसे कहें कि होरी, घीसू, माधव अपने बारे में खुद ही लिखने लगे, जिन्हें हम दलित कहानियां कहते हैं। हमने जो उपन्यास लिखे थे, तरह-तरह के कैरेक्टर्स बनाए थे, बड़ी क्रांतिकारी किस्म की बातें करने वाली स्त्रियों का जिक्र किया था। वे सब महिलाएं अब खुद लिखने लगीं, तो हमारा लिखना फीका हो गया।

-हिंदी के दिवंगत कथाकार

मंजिलें और भी हैं
>> बिनोद दुलू बोरा

सांप को बचाने में पीठ पर पत्थर खाए

मैं असम में नगांव जिले के चापानाला गांव का रहने वाला हूं, जो कर्बी पहाड़ी के बिल्कुल पास में है। बचपन से ही मैं आसपास की प्रकृति और वन्यजीवों से बेहद घुल-मिल गया था। मुझे उन ग्रामीणों और बाहर से आए शिकारियों से बेहद घृणा होती थी, जो पास के जंगल में शिकार करने आते थे। मैं हमेशा इसका विरोध करता था, लेकिन उम्र में छोटा होने के कारण तब मेरी बातों को बहुत महत्व नहीं दिया जाता था। लेकिन एक घटना ने गांव में मेरी छवि बदल दी। एक रात की बात है। मैं सोने जा ही रहा था कि मुझे हाथी के चिंघाड़ने की आवाज सुनाई पड़ी। हमारे गांव में हाथी आते ही रहते हैं। लेकिन उसकी आवाज स्वाभाविक नहीं थी। ऐसा लग रहा था कि वह किसी मुसीबत में है। मैं समझ गया कि हाथी या उसका बच्चा पड़ोस के कच्चे कुएं में गिर गया होगा। मैंने घर और पड़ोस में यह बात बताई। लेकिन किसी ने मेरी बात नहीं मानी। सुबह देखा, तो हाथी का एक बच्चा कुएं में गिर गया था, और आसपास हाथियों की भीड़ थी। मेरी पहल से कुछ युवाओं ने उसे कुएं से निकाला।

मैं हाट में पक्षियों, कछुओं और दूसरे वन्यजीवों को बिकते हुए देखता, तो मुझे बहुत दुख होता। लोग इनका मांस खाते थे। मैंने एक तरकीब निकाली। मैं हर हाट में कुछ पक्षियां खरीदता, फिर उन्हें उड़ा देता। मेरे इस काम से ज्यादातर लोग दुखी होते थे। कुछ लोगों ने तो यहां तक कहा कि चूंकि मैं कमाता नहीं, इसलिए पैसे का मोल नहीं समझता और पिता तथा बड़े भाइयों की मेहनत की गाढ़ी कमाई यों ही लुटा रहा हूं। लेकिन मेरे घर के लोगों ने इस पर बहुत ध्यान नहीं दिया।

पिछले करीब तीस साल में मैं ढाई हजार वन्यजीवों को बचा चुका हूं, इससे युवा पीढ़ी भी प्रेरित हुई है।

कुछ साल बाद मैं ग्रीन गार्ड नेचर ऑर्गनाइजेशन (जीजीएनओ) से जुड़ गया। नगांव की यह संस्था वन्यजीव संरक्षण के क्षेत्र में काम करती थी। और इस तरह वन्यजीव संरक्षण के क्षेत्र में मेरा कामकाज शुरू हुआ। पहले मैं शौकिया यह काम करता था, लेकिन अब मैं एक संस्था से जुड़कर यह काम कर रहा था। पिछले तीस साल में मैंने ढाई हजार से अधिक वन्यजीवों को बचाया है, जिनमें हाथी के बच्चे, तेंदुए के बच्चे, भालू के बच्चे, चीनी पैंगोलिन, हिरण, सैकड़ों कछुए और सैकड़ों पक्षियां हैं। मैंने छह सौ से अधिक सांपों को मारे जाने से बचाया है, जिनमें चौदह किंग कोबरा भी थे। जो वन्यजीव बचाए जाने के क्रम में घायल हो जाते हैं, मेरे घर के पीछे उनका इलाज किया जाता है। वहां हमारे एनजीओ ने एक अस्थायी बचाव केंद्र बना रखा है।

अपने इस काम की कीमत भी मुझे कई बार चुकानी पड़ी है। एक बार मैंने रास्ते में कुछ लोगों को एक किंग कोबरा पर पत्थर बरसाते हुए देखा, तो उसे बचाने के लिए मैं उसके पास चला गया। इस दौरान कई पत्थर मेरी पीठ पर लगे। उधर वह गुस्सैल कोबरा भी मुझ पर झपटना चाहता था। यह देख लोगों ने पत्थर मारना छोड़ दिया और वह सांप जंगल में चला गया। मेरे कामकाज में पौधे लगाना भी शामिल है। हमारी संस्था की ओर से अलग-अलग इलाकों में पौधे लगाए जाते हैं। वन्यजीव संरक्षण के क्षेत्र में इतने दिनों से काम करने कारण मेरे मददगारों की संख्या अब सैकड़ों में है, जो मुझे सूचना देते रहते हैं कि कहां कौन-सा वन्यजीव संकट में है। मेरी पत्नी मेघना भी वन्यजीव संरक्षण का काम करती है। मुझे इस बात का संतोष है कि हमारी संस्था के प्रयासों से नई पीढ़ी अब वन्यजीवों के संरक्षण के प्रति जागरूक हो रही है।

-विभिन्न साक्षात्कारों पर आधारित।

तंत्र सुधारने वाला इंजीनियर

रक्षा मंत्री बनने पर मनोहर परिकर मंत्रालय के लिए नई उम्मीद बनकर आए थे। वह सैनिकों एवं उनके परिवारों के कल्याण के लिए चिंतित थे, तो संवेदनहीन नौकरशाही को बदलने की कोशिश में भी लगे रहे। उन्हें याद कर रहे हैं भाजपा सांसद *राजीव चंद्रशेखर*-

मनोहर परिकर के निधन की खबर बहुत ही दुखदायी है, हालांकि मुझे इसकी आशंका जरूर थी। वह पिछले कुछ महीनों से बीमार थे, लेकिन अपने इस कष्टपूर्ण समय में भी वह गरिमामय एवं साहसी बने रहे। कुछ सप्ताह पहले ही, पिछले महीने फरवरी में मैं मनोहर परिकर से अंतिम बार मिला था। उनसे उस आखिरी मुलाकात की याद मेरे जेहन में ताउम्र रहेगी। आईआईटी से इंजीनियर परिकर भाजपा के उन चुनिंदा नेताओं में से थे, जिन्होंने प्रधानमंत्री पद के लिए नरेंद्र मोदी के नाम की अनुशंसा की थी। मैं उनसे पहली बार दिल्ली में मिला और मुझे याद है कि उनसे मेरी वह मुलाकात मेरे मस्तिष्क पटल पर बहुत बड़ा प्रभाव छोड़ गई। वह एक ऐसे राजनेता थे, जिनमें किसी भी प्रकार का दंभ नहीं था। वह हमेशा ही साधारण, लेकिन स्पष्ट वक्ता रहे।

जब मनोहर परिकर रक्षा मंत्री बने, तब वह रक्षा मंत्रालय के लिए एक नई उम्मीद बनकर आए थे। वह सेना में कार्यरत हमारे सैनिकों एवं उनके परिवार के कल्याण के लिए बहुत चिंतित थे। मुझे इतना अवश्य पता था कि मुझे इन कामों के लिए उन्हें कुछ समझाने की आवश्यकता नहीं है। वह संवेदनहीन एवं उदासीन नौकरशाही को सही करने के तरीके ढूंढ रहे थे, जिसने यूपीए सरकार के दौरान अपनी विस्तृत जड़ें फैला ली थीं। उन्होंने बिना किसी झिझक एवं नौकरशाहों के सहयोग के बगैर सीधे ही वृद्ध सैनिकों एवं उनके परिवारों से मुलाकात की, एवं उनकी समस्याएं और सुझाव सुने। वृद्ध एवं विकलांग सैनिकों को जिन समस्याओं का सामना करना पड़ता है, उनके समाधान के लिए उन्होंने विशेषज्ञों द्वारा सुझाव देने हेतु एक विशेषज्ञ समिति का गठन किया।

मनोहर परिकर (1955-2019)

वयोवृद्ध सैनिकों एवं सेना के लोगों के लिए 'वन रैंक-वन पेंशन' बहुत दिनों से अटका हुआ मुद्दा था। वर्ष 2006 में सांसद बनने के बाद मैंने तुरंत ही इस मुददे पर काम करना शुरू कर दिया था। उन लोगों के लिए यह बहुत संवेदनशील मुद्दा था, जिन्होंने सशस्त्र सेना में काम किया था। मनोहर परिकर ने घंटों-घंटे समय बिताकर अकेले अपने बूते पर इस समस्या की विस्तृत जानकारी एवं आंकड़े लेकर इसे आगे बढ़ाया। इससे यह सुनिश्चित हुआ कि प्रधानमंत्री के त्वरित एवं दृढ़ सहयोग से सरकार को करीब 40,000 करोड़ रुपये का खर्च आएगा।

दूसरी बार मुझे तब आश्चर्य हुआ, जब मैंने प्राइवेट मेंबर्स बिल के रूप में नेशनल आर्म्ड फोर्सेस कोवनेंट बिल संसद में पेश किया। यह वह बिल था, जो सुनिश्चित करता था कि युद्ध के दौरान मारे गए सैनिकों के परिवारों एवं वयोवृद्ध सैनिकों की देखभाल का दायित्व सरकार पर होगा। संसद में कनिष्ठ मंत्री के दिखाने पर प्राइवेट मेंबर्स बिल पर चर्चा होती है। लेकिन तीनों मौकों पर मेरे इस बिल पर परिकर जी ने स्वयं अपना सहयोग दिया, क्योंकि वह इस बिल से पूरी तरह सहमत थे।

मैं बीमारी के समय उनके हालचाल पूछता रहा और प्रार्थना भी करता रहा। विगत फरवरी में मैं उनसे मिल आया, जो मेरी उनसे आखिरी मुलाकात साबित हुई। मैं उनसे बहुत सारी बातें कहना चाहता था, जो उन्होंने रक्षा मंत्री बनने के बाद शुरू की थीं और जो आज संभव हो पाई हैं। जैसे कि मैं उन्हें बताना चाहता था कि वृद्ध एवं विकलांग सैनिकों के मुद्दों का समाधान करने के लिए उन्होंने जो कमेटी बनाई थी, उसकी सिफारिश लागू हो गई है। इस देश ने 70 साल से जिस राष्ट्रीय युद्ध स्मारक का इंतजार किया था, और उन्होंने एवं प्रधानमंत्री ने जिस स्मारक की कल्पना की थी, अंततः उसका उद्घाटन होने वाला था। मैंने यह सब उनसे कहा। इसके जवाब में उन्होंने अपना सिर हिलाया। बीमारी से जूझते हुए मैं उनके धैर्य, साहस एवं दृढ़ संकल्प से कार्यरत होने के अद्भुत गुण की सराहना करता हूं।

खुली खिड़की

प्रति हजार आबादी पर नर्स

किसी भी देश की स्वास्थ्य सेवा पैरा-मेडिकल स्टाफ पर निर्भर करती है। यदि प्रति हजार आबादी पर नर्सों की संख्या की बात करें, तो इस मामले में नॉर्वे सबसे आगे है, जहां यह आंकड़ा 17.7 है, जबकि हमारे देश में यह आंकड़ा 1.4 है।

स्रोत- OECD

ब्राह्मणी के पांच रत्न

महर्षि कपिल रोज सुबह अपने आश्रम से पैदल ही गंगा स्नान के लिए जाया करते थे। रास्ते में एक छोटा-सा गांव पड़ता था, जहां कई किसान परिवार रहा करते थे। वहीं एक ब्राह्मणी की कुटिया भी थी। महर्षि जब भी उस रास्ते से निकलते, तो ब्राह्मणी उन्हें धान कूटते हुए या दूसरा कोई काम करते मिल जाती।

एक दिन महर्षि ने ब्राह्मणी से हमेशा काम करते रहने का कारण पूछा, तो पता चला कि पति की मृत्यु के बाद ब्राह्मणी पर परिवार के पालन-पोषण की जिम्मेदारी आ गई है। महर्षि को उस पर दया आ गई।

सत्संग

एक दिन उन्होंने ब्राह्मणी से कहा, भद्रे, मैं पास ही के आश्रम का कुलपति कपिल हूं। मेरे कई शिष्य राजपरिवारों से हैं। अगर तुम चाहो, तो मैं तुम्हारी आजीविका की स्थायी व्यवस्था कर सकता हूं।

ब्राह्मणी ने हाथ जोड़कर महर्षि का आभार व्यक्त किया और कहा, मुनिवर, इस दयालुता के लिए मैं आपकी आभारी हूं। पर न मैं निर्धन हूं, न ही असहाय। मेरे पास पांच रत्न हैं। महर्षि ने उन रत्नों को देखने की जिज्ञासा प्रकट की, तो उन्होंने आसन बिछाकर उन्हें बैठने के लिए कहा।

इतने में ब्राह्मणी के पांचों पुत्र पढ़कर विद्यालय से लौटे। महर्षि ने थोड़ी देर उन बच्चों से बातचीत के बाद ब्राह्मणी को प्रणाम किया और विदा होते हुए बोले, जिसके पास ऐसे पांच रत्न हों, उसे सचमुच चिंतित होने की जरूरत नहीं है।

-संकलित

हरियाली और रास्ता

रीमा, राहुल और मदद

रीमा की कहानी, जिसकी सोच एक अनजान युवक ने बदल दी और उसने भी एक जरूरतमंद की मदद की।

रात का समय था और सड़क सुनसान। डर के मारे रीमा की हालत खराब थी। गाड़ी का टायर पंचर हो गया था। वह गाड़ी से निकल कर बाहर खड़ी हो गई। दूर से उसे एक मोटरसाइकिल आती दिखी। वह तय नहीं कर पा रही थी कि उसे रोके या नहीं। मोटरसाइकिल वाला रीमा को देखकर समझ गया कि वह बेहद डरी हुई है। उसने रीमा से कहा, मेरा नाम राहुल शर्मा है। आप चिंता न कीजिए, गाड़ी में बैठिए। मैं टायर बदल देता हूं। कुछ ही देर में उसने टायर लगा दिया। रीमा बोली, मैं आपको कितने पैसे दे दूं। राहुल ने कहा, मैंने यह काम पैसों के लिए नहीं, आपकी मदद करने के लिए किया है। जब मैं कभी मुसीबत में था, तब मेरी भी किसी ने मदद की थी। आप भी किसी जरूरतमंद को देखें, तो उसकी मदद जरूर कीजिएगा। यह कहकर राहुल चला गया। रीमा भी आगे बढ़ गई। थोड़ी दूर पर एक पेट्रोल पंप के किनारे रीमा को एक चाय की दुकान दिखी। जब वह वहां चाय पीने उतरी, तो देखा कि कम उम्र की एक महिला दुकान संभाल रही है। उसे देखकर लग रहा था कि उसकी माली हालत ठीक नहीं। चाय पीते हुए रीमा ने जब उससे बात की, तो उसका शक यकीन में बदल गया। रीमा ने उसे सौ रुपये का नोट दिया, और जब तक वह उसके छुट्टे वापस लाती, रीमा वहां से चली गई।

उस लड़की की समझ में कुछ नहीं आया। लड़की ने देखा, कागज के एक टुकड़े पर रीमा कुछ लिखकर पांच सौ रुपये के चार और नोट वहां छोड़ गई थी। उस पर लिखा था, जब मैं मुसीबत में थी, तो मेरी भी किसी व्यक्ति ने मदद की थी। यह मेरी तरफ से मदद समझना। वह जब दुकान से घर लौटी, तो देखा कि उसका पति सो रहा था। उसने उसके कानों में धीरे से कहा, आज मेरा दिन बहुत अच्छा बीता।

हम जैसा बर्ताव दूसरों के साथ करेंगे, वैसा ही बर्ताव हमारे साथ भी होगा।